विशेष लाभ नहीं हो सकता। दूसरी ओर, यदि वह पूर्णतया कृष्णभावनाभावित होकर भगवत्सेवा के परायण हो जाय तो ये सभी गुण उसमें स्वतः उदित हो जायेंगे। सातवें श्लोक के अनुसार सद्गुरु का आश्रय लेना आवश्यक है। जिस मनुष्य ने भक्तिपथ स्वीकार किया है, उसके लिए भी यह अनिवार्य है। पारमार्थिक जीवन का प्रारम्भ सद्गुरु की शरणागति से ही होता है। भगवान् श्रीकृष्ण यहाँ स्पष्ट शब्दों में कह रहे हैं कि यह ज्ञान का पथ कल्याण का सच्चा मार्ग है। इसके विपरीत जो कुछ भी मनोधर्मी की जायगी, वह अनर्थकारी सिद्ध होगी।

ज्ञान के जिन साधनों यहाँ दिग्दर्शन है, उनका भाव इस प्रकार है। **अमानित्वम्** (विनम्रता) का अर्थ है कि दूसरे अपना सत्कार करें—ऐसी अपेक्षा न रखे। देहात्मबुद्धि के कारण हम दूसरों से सम्मान प्राप्ति के लिए बड़े आतुर रहते हैं; किन्तु देह से भिन्न अपने स्वरूप को पूर्ण रूप से जानने वाले की दृष्टि में देह से सम्बन्धित मान-अपमान निरर्थक हैं। इस विषय-मरीचिका के लिए लालायित रहना योग्य नहीं। धर्मात्मा के रूप में आत्म-ख्याति की इच्छा भी साधारण लोगों में प्रबल रहती है। परिणामतः प्रायः देखा जाता है कि धर्म के तत्त्व को जाने बिना ही वे किसी ऐसे दल में, जो यथार्थ में धर्माचरण नहीं करता, सम्मिलित होकर धर्म-गुरु के रूप में अपना विज्ञापन किया करते हैं। अध्यात्मविद्या की उन्नति को नापने के लिए कोई न कोई उपयुक्त कसौटी होनी चाहिए। उपरोक्त गुणों का अन्तःकरण में कितना विकास हुआ है, इस आत्म-परीक्षा से पारमार्थिक उन्नति को जाँचा जा सकता है।

सामान्यतः **अहिंसा** का तात्पर्य देह का वध अथवा नाश न करने के सीमित अर्थ में समझा जाता है। परन्तु वास्तव में अहिंसा का अर्थ किसी भी जीव को किसी भी प्रकार से पीड़ित न करना है। देहात्मबुद्धि के अज्ञान में बँधा मानवसमाज नित्य-निरन्तर सांसारिक दुःखों को भोगता रहता है। अतः जो ज्ञान-प्रचार के द्वारा लोगों का उद्धार नहीं करता, वह हिंसक है। जनता में सच्चे ज्ञान के प्रचार में प्राण-पण से प्रयास करना चाहिए, जिससे वह इस भव-बन्धन से मुक्त हो सके। यही सच्ची अहिंसा है।

क्षान्तिः का तात्पर्य है कि दूसरों के तिरस्कार और अपमान को सहने का अभ्यास करे। जो अध्यात्म-ज्ञान का सेवन करता है, उसे दूसरों से प्रायः अपमानित होना पडता है। यह स्वाभाविक है; प्रकृति का स्वरूप ऐसा ही है। स्वरूप-साक्षात्कार के परायण प्रह्लाद जैसे पाँच वर्ष के बालक को भी अपने पिता के कारण महान् विपत्तियों का सामना करना पड़ा, क्योंकि वह उसके भक्तिभाव का विरोधी था। पिता ने नाना प्रकार से उसे मारने का प्रयत्न किया; परन्तु प्रह्लाद ने वह सब सहन कर लिया। इससे शिक्षा मिलती है कि ज्ञान-प्राप्ति के मार्ग में अनेक व्यवधान भी क्यों न आयें, पर हमें सहिष्णुता और धैर्यपूर्वक भक्ति में निष्ठ रहते हुए पारमार्थिक उन्नति करते रहना चाहिये।